जीवनपथ हिन्दी

₹ 10/-

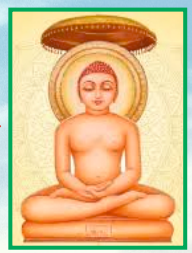

JEEVANPATH HINDI

Vol. No. 14, Issue No. 8 (₹ १०/- प्रचार के लिए) Mumbai, 15th March 2026
Website : www.jeevanjyot.in Total 36 Pages E-mail : jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

श्री जलाराम अन्नदान क्षेत्र... जय श्री जलाराम बापा' समाज के लोकहित की भावना में पूर्ण रूप से गैरव्यावसायिक मुखपत्र **जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट** की भेंट

तस्वीर बोल रही हैं मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा-खेतवाडी) प्रेरित जीवदया की

घायल कबूतर को इलाज के लिए जीवन ज्योत संस्था के जीवदया विंग में लाया गया ।

गरीब, निराधार कर्करोगग्रस्त मरीजों को अन्नक्षेत्र में, जीवदया में और टॉयबैंक में अनुदान देने वाले और इस अंक के सौजन्यदाता

साईशा-नाईशा मेघना निलय दाणी (हरसोल-माटुंगा) के जन्मदिन के अवसर पर

तस्वीर बोल रही हैं डायालिसिस सेन्टर की

जीवन ज्योत संस्था और मेवा संस्था द्वारा संचालित डायालिसिस सेन्टर में डायालिसिस करा रहे मरीज़ ।

तस्वीर बोल रही हैं अंगदान की

मस्तिष्क मृत शरीर से हृदय और अन्य अंगों को भुज अस्पताल से अहमदाबाद और अस्पताल से भुज हवाई अड्डे तक ग्रीन कोरीडोर बनाकर भेजे जाने के दौरान, अस्पताल के कर्मचारियों, परिवार के सदस्यों और पुलिस विभाग ने विशेष सलामी दी।
जीवन ज्योत संस्था और श्री लोक सेवा सार्वजनिक संस्था ने इस सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विशेष सूचना : यह पुस्तिका आपको सप्रेम भेंट के रूप में भेजी है । इस पुस्तिका को आप अपने मित्र-परिवार को पढ़ने के लिए दीजिए, ताकि उनसे कॅन्सर पीड़ित रोगियों को आपके अनुदान व सहयोग का कवच मिल सके । आपकी इस सेवा के लिए हम आपके चिरकाल तक ऋणी रहेंगे ।

स्थापना : १९८३

जीवनपथ

पथदर्शक : श्री खेतशी मालशी सावला

मार्गदर्शक : श्री बुद्धिचंद मारू

मुद्रक/स्थापक/प्रकाशक : हरखचंद सावला

संपादक : चन्द्रा शरद दवे

सह संपादक : आशा दसोंदी

–: शाखा कार्यालय :–

कोलकता कार्यालय

विनेश शेठ (गोपाल), ५, तल मजला,
खीरु प्लेस, कोलकता- ७०० ०७२. टे.: २२१७७८३४

जलगांव कार्यालय

शाह राघवजी लालजी सतरा (गुंदाला)
१०९, पोलनपेथ, जलगांव- ४२५००१
दूरध्वनि:०२५७-२२२४१५६ मो: ०९६७३३६४२९०

सांगली – कोल्हापुर

मीना जेठालाल मारू (हालापर)
मो. ७७०९९००४३३

नालासोपारा कार्यालय

१२, लक्ष्मी शोपिंग सेन्टर, राधा-कृष्णा होटेल
के बाजु में, तुलींज रोड,
नालासोपारा (ईस्ट)
खूश्बु गाला - मो. ८९२८७६५३०१

(कायदाकीय अधिकार क्षेत्र मुंबई रहेगा)

–: मुख्य कार्यालय :–

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

५/६ कोंडाजी चाल, जेरबाई वाडिया रोड,
टाटा हॉस्पिटल के पास, पेट्रोल पंप के सामने, परेल,
मुंबई-१२. मो.: ९८६९२०६४००/९०७६१६९३५५

इस पुष्प की पंखुडियाँ

सम्पादक की लेखनी से...	४
भजन - श्याम मेरी झोली भर दे	७
व्यक्ति विशेष - रूथ हैंडलर	९
कबूल है	११
पथ के दावेदार	१३
स्वाभिमान	१७
क्षमा ग्रहण कर बैर को बिसराएं	१८
काव्य	१९
मूरखराज	२१
मिलना और बिछड़ना	२६
स्वयं को जाँचें	२७
माँ-बाप का दिल	२८
आते-वस्त्र, जाते-गुण	३०
आजमाकर देखिए - बच्चों के रोग	३१
शेर बनना है या लोमड़ी।	३२
हास्य का हसगुल्ला	३४

अंक में दिए गए उपचार और सलाह का उपयोग अनुभवी की सलाह लेकर ही करें ।

अब वेबसाइट पर "जीवनपथ" पढ़ सकते हैं
www.jeevanjyot.in

ट्रस्ट रजि. नं. P.T.R.E.-17259 (M) - F.C.R.A. 083780700

❂ TI.T. EXEMPTION, DIT (E), MC/8E/80G/53(2009-11)

❂ CSR Registration No. CSR 00002659 ❂ **Email :** jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ अरिहंते नमो नमः
संसार के प्रत्येक जीव का हर क्षण मंगलमय हो।

संपादक की लघु लेखनी से...

प्रिय मान्यवर पाठको,

दर्जी का दिमाग

एक व्यक्ति बढ़िया सा कपड़ा खरीदा और सूट सिलवाने के लिए एक दर्जी के पास गया। दर्जी ने कपड़ा लेकर नापा और कुछ सोचते हुए कहा, ''कपड़ा कम है। इसका एक सूट नहीं बन सकता।''

वह दूसरे दर्जी के पास चला गया। उसने नाप लेने के बाद कहा, ''आप दस दिन बाद सूट ले जाइए ।''

वह निश्चित समय पर दर्जी के पास गया। सूट तैयार था। अभी सिलाई के पैसे दे रहा था कि दुकान में दर्जी का पांच साल का लड़का प्रविष्ट हुआ । उस व्यक्ति ने देखा कि लड़के ने बिल्कुल उसी कपड़े का सूट पहन रखा है। थोड़ी सी बहस के बाद दर्जी ने बात स्वीकार कर लिया।

वह व्यक्ति पहले दर्जी के पास गया और फुंकारते हुए कहा, ''तुम तो कहते थे कि कपड़ा कम है, पर तुम्हारे साथ वाले दर्जी ने उसी कपड़े से न केवल मेरा, बल्कि अपने लड़के का भी सूट बना लिया।''

दर्जी धीरज से उल्टा रहा, फिर कुछ सोचते हुए बोला, ''लड़के की उम्र क्या है?''

आदमी: ''पाँच वर्ष ।''

दर्जी चहककर बोला, ''तभी तो, श्रीमान मेरे लड़के की उम्र १८ वर्ष है।''

■

–: दानवीर दाताओं के लिए विशेष सूचना :–

दानवीर दाताओं द्वारा जीवन ज्योत संस्था के बैंक खाते में दान करने के बाद, जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय पर ईमेल : **jeevan_jyot@yahoo.in** या वॉट्सअप नं. ९८६९२०६४०० पर अपना नाम, पत्ता, पॅनकार्ड नं. और दान कोर्पस या सामान्य में हैं यह जानकारी दे ।

दाता के उपरोक्त विवरण के अभाव में, संस्था को आपके दान की राशि पर ३५% कर का भुगतान करना पड़ता है। जिसके कारण कैंसरग्रस्त मरीज़ों के लिए उपलब्ध धनराशि में कमी आती है ।

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय से विदेश से अनुदान स्वीकार करने के लिए विशेष स्वीकृति प्राप्त हुई है। अतः विदेश से दान देने के इच्छुक दानवीर दाताओंसे **FCRA** का बैंक खाता नंबर संस्था के कार्यालय से प्राप्त करने का अनुरोध है । प्राप्त जानकारी के अनुसार कोई अज्ञात व्यक्ति जीवन ज्योत संस्था के नाम का उपयोग करके डुप्लिकेट रसीद और प्रमाणपत्र पर अनुदान एकत्र कर रहा है। यदि दाताओं को कोई संदेह हो, तो अनुदान देने से पहले कृपया जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय में संपर्क करें ।

बैंक का नाम / IFSC नं.	खाता नं.	ब्रांच
बैंक ऑफ महाराष्ट्र MAHB0000563	20059826756	परेल (भोईवाडा)

संस्था के अनेक समाजसेवी प्रकल्पों में से कुछ प्रकल्प दाताओं के नाम पर कार्यान्वित हैं

१) श्रीमती नलिनीबेन बिपीनचंद्र मेहता : कैंसर डिटेकशन सेन्टर
२) श्रीमती चंपाबेन झुमखराम शाह : कोलोस्टोमी बैग सेन्टर
३) श्रीमती साकरबेन एल. डी. शाह (बिदड़ा) : जलाराम अन्नदान क्षेत्र
४) श्रीमती पुष्पावंती किशोरभाई भोजराज (मेराउ) : ऐम्ब्युलन्स् सेवा
५) श्रीमती नयनाबेन बिपीनभाई दाणी : वरिष्ठ नागरिक आइकार्ड सेवा
६) श्रीमान महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) : ब्लैक मोलाइसीस दवा
७) श्रीमान डुंगरशीभाई मुलजी मारू (काराघोघा) : आधुनिक उपकरण.
८) कु. साईशा - नाईशा दाणी : टॉय बैंक
९) मातुश्री खेतबाई देवराज मारु (हालापुर) : चेरी. डिस्पेन्सरी
१०) मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा) : जीवदया
११) मातुश्री चंद्राबेन जयंतिलाल चत्रभुज मोदी : हल्दी दूध योजना
और मातुश्री लाछबाई हीरजी करमशी भेदा (समाघोघा)
१२) श्री हरीराम माथुराम अग्रवाल (चेम्बुर) : फल वितरण
१३) मातुश्री सुशीलाबेन कांतिलाल दाणी (हरसोल) : एनिमल ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१४) मातुश्री ललिताबेन बिहारीलाल शाह (सांताक्रुझ) : ओजोन थेरेपी सेन्टर
१५) मातुश्री ताराबेन जयंतिलाल वाघाणी (माटुंगा) : जीवन ज्योत ड्रग बैंक
१६) देविका सोमचंद लालका (अमलनेर)
(स्व. कु. हंसाबेन रतनशी लोडाया) : कॉम्पिटिशन् योजना
१७) मयुरभाई महेता और जितेन्द्र पारेख : ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१८) मातुश्री इन्दुमति महेन्द्र गांधी (लिंबोद्रा-बोरीवली) : पेथोलोजी सेन्टर
१९) श्रीमती मंजुलाबेन नटवरलाल शाह (हरसोल) : ब्लड बैंक
२०) श्रीमान नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) : मेडिकल कैम्प
२१) श्रीमती नलिनीबेन रसीकभाई जादवजी शाह : ऐम्ब्युलन्स् सेवा
२२) स्व. श्री इन्दरचंद लख्खीचंद खींवसरा (धुलिया) : पस्ती योजना
२३) डॉ. रमेश मंत्री : अनाज वितरण
२४) श्रीमती उषाबेन मणिलाल गाला (कांडागरा-गोरेगाम) : जलाराम अन्नक्षेत्र
२५) श्रीमती साकरबेन प्रेमजी चेरीटेबल ट्रस्ट (वर्ली) : केमोथेरेपी विभाग

भजन

श्याम मेरी झोली भर दे

(तर्ज: अगर तू लड़की होती...)

तेरी महिमा सुण कर आया, तुम्हें लखदातार बताया,
फिर हम को ही क्यूं तरसाया, श्याम मेरी झोली भर दे।
श्याम मेरी झोली भर दे ।।

यदि मेरी सुन लो, तेरा क्या घट जाए,
हो दया तुम्हारी, सौदा पट जाए।
तू है दाता, मैं हूँ भिखारी, बात मान ले हमारी,
तेरे दर पर पल्ला बिछाया, श्याम मेरी झोली भर दे।
श्याम मेरी झोली भर दे...

दर-दर की ठोकर, मत श्याम खिलाना,
कहीं और मैं जाऊँ, दिन वो ना दिखाना।
अब करो उपकार, श्याम दीन की पुकार,
दानी तुम सा नजर ना आया, श्याम मेरी झोली भर दे।।
श्याम मेरी झोली भर दे...

मेरा काम किया तो, तेरे लाड़ लड़ाऊँ,
पलकों का झूला प्रभु, तुम्हें झुलाऊँ ।
अब खोल दे भण्डारा, काम कर दे हमारा,
तेरा सच्चा दरबार बताया, श्याम मेरी झोली भर दे।
श्याम मेरी झोली भर दे....

दर पर आए का प्रभु मान बढ़ाना,
मत और सताओ, चरणों से लगाना।
तेरे भक्त हैं अज्ञान, बात जो भी कहे मान,
सदा तुमने ही साथ निभाया, श्याम मेरी झोली भर दे।
श्याम मेरी झोली भर दे...

गत महीने की संस्था की गतिविधियाँ

- अन्नक्षेत्र में भोजन के २१ तथा हल्दी दूध के ४ कार्ड बनाए।
- १३७ कैंसरग्रस्त परिवारों को अनाज वितरित किया गया ।
- प्रतिदिन ८६७ मरीज़ों को फल दिया गया ।
- १७ मरीज़ों को रक्त के लिए सहायता प्रदान की गई।
- ४ मरीज़ों के रहने की व्यवस्था की गई।
- ६ मरीज़ों को अलग-अलग संस्था में आवेदन पत्र देकर उपचार पत्र बनाकर दिए गए, जिससे उन्हें अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है।
- कैंसर पीड़ित मरीजों को ९,५६,५००/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- अन्य मरीजों को ३,२७,८४०/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- ८ घायल पशु-पक्षीओं को ईलाज के लिए अस्पताल पहुँचाया गया ।
- पशु-पक्षीओं के ईलाज के लिए रु. ३,९३,२५०/- की दवाएँ दी गई ।
- अपंग व्यक्तिओं को ४ वोकर, २ वॉकिंग स्टीक, ३ कमोड चेअर, ४ व्हिलचेअर, ३ पलंग, ४ ऑक्सिजन मशीन और ४ ऑक्सिजन सिलेण्डर दिए गये।
- २ कैंसरग्रस्त मरीज़ों की फाईल बनाई गई ।
- १७ मरीज़ों ने निःशुल्क ऐम्ब्युलेंस् सेवा का लाभ लिया ।
- ३ कर्करोग पीड़ितों को कोलोस्टॉमी बेग कम कींमत पर दी गई ।
- २ लावारिस कैन्सरग्रस्त मरीजों का अंतिम संस्कार किया गया ।
- रास्ते में बेहाल स्थिति में पड़े रहनेवाले ४ व्यक्तिओं को वृद्धाश्रम पहुँचाया गया।

देहदान प्रतिज्ञा पत्र

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एन्ड केअर ट्रस्ट की विभिन्न प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति 'देहदान' की है, किसी भी भाई-बहन की इच्छा वसियत (विल) (मरने से पहले के घोषणापत्र) बनाने की हो, तो स्वतः के हाथ से एक प्रतिज्ञापत्र भरना होगा। स्वतः के शरीर या शरीर के किसी भी भाग को आधुनिक प्रगति के लिए या मेडिकल साइन्स के विद्यार्थियों के काम में आए इस हेतु से प्रतिज्ञापत्र बनाए गये हैं। प्रतिज्ञापत्र जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय से आपको मिलेंगे या कुरियर द्वारा आपको पहुंचा दिये जाएंगे।

व्यक्ति विशेष

रूथ हैंडलर (१९१६–२००२)

रूथ हैंडलर की दौलत और शोहरत का कारण यह है कि उन्होंने बार्बी डॉल ईजाद की थी। सन् २००० तक एक अरब बार्बी डॉल्स बिक चुकी थीं और इस बिज़नेस से हर साल दो अरब डॉलर की आमदनी हो रही थी।

बार्बी डॉल अचानक नहीं बन गई थी। इसे बनाने और बेचने के लिए रूथ हैंडलर को काफी पापड़ बेलने पड़े थे। रूथ हैंडलर के पति इलियट ने अपने दोस्त हेरॉल्ड मैटसन के साथ मिलकर मैटल नाम की खिलौना कंपनी शुरू की और खिलौना बंदूकें जैसे सामान बेचने लगे। एक दिन रूथ ने अपनी बेटी बारबरा को कागज की गुड़ियों से खेलते देखा। अचानक रूथ के मन में विचार आया कि क्यों न एक ऐसी गुड़िया बनाई जाए, जो युवती जैसी दिखती हो, जिसका सीना उभरा हुआ हो और फ़िगर आदर्श हो। हैंडलर जानती थीं कि लड़कियों को यह कल्पना करना बहुत अच्छा लगता है कि वे बड़ी होकर कैसी दिखना चाहती हैं। उन्होंने तत्काल एक ऐसी गुड़िया बनाने का फ़ैसला किया, जो छोटी बच्ची नहीं, बल्कि वयस्क युवती की तरह दिखती हो । जब हैंडलर इस गुड़िया को लेकर मैटल कॉरपोरेशन यानी अपने पति की कंपनी में गई, तो संचालक मंडल ने उनके प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया। उन्हें दो प्रमुख आपत्तियाँ थीं । पहली तो यह कि यह बहुत महँगा प्रयोग है और दूसरी यह कि इस तरह की गुड़िया कभी लोकप्रिय नहीं होगी।

संचालक मंडल के इंकार के बावजूद रूथ हैंडलर ने हार नहीं मानी। उन्हें अपने विचार पर विश्वास था, अपने सपने पर यकीन था। कुछ समय बाद जब रूथ यूरोप गई, तो वे वहाँ से 'लिली' नाम की गुड़िया लेकर आई, जिसे जर्मनी की कॉमिक स्ट्रिप की वैम्प पात्र के अनुरूप बनाया गया था । हँडलर ने लिली से मिलती-जुलती गुड़िया बनाई । यहाँ तक कि उन्होंने एक डिज़ाइनर से उसके कपड़े भी बनवाए। परिणाम था बार्बी डॉल, जिसका नाम उन्होंने अपनी बेटी बारबरा के घर के नाम पर रखा था । आख़िर रूथ हैंडलर के संकल्प के आगे मैटल

कॉरपोरेशन ने घुटने टेक दिए और उनकी गुड़िया को बाजार में उतारने का फ़ैसला कर लिया।

बार्बी डॉल १९५९ में पहली बार न्यूयॉर्क के खेल मेले में नज़र आई। लड़कियाँ इसे देखकर इतनी बौरा गई कि हंगामा मच गया । ३ डॉलर की बार्बी ने बिक्री का एक नया कीर्तिमान बना दिया, जब ३,५१,००० बार्बी डॉल्स हाथोहाथ बिक गई । तब से बार्बी की लोकप्रियता आज तक कम नहीं हुई है। एक अरब से ज़्यादा बार्बी डॉल्स बिक चुकी हैं और इसे खिलौना उद्योग के इतिहास में सबसे सफल प्रॉडक्ट माना जाता है । बार्बी डॉल अमेरिका में इतनी लोकप्रिय हुई कि जब १९७६ में अमेरिका का टाइम कैप्सूल तैयार हुआ, तो उसमें बार्बी को भी शामिल किया गया। रूथ हैंडलर ने लड़कियों के सपने को साकार कर दिया था। उन्होंने बार्बी को अमेरिकी युवती के प्रतीक के रूप में स्थापित कर दिया था। छोटी-छोटी लड़कियों को भविष्य के सपने दिखाने वाली बार्बी अब तक डॉक्टर, एस्ट्रोनॉट, बिज़नेसवुमैन, पुलिस अफ़सर, यूनिसेफ़ स्वयंसेवी और खिलाड़ी के रूप में आ चुकी है।

बार्बी ने अमेरिकी किशोरी के फ़ैशन मॉडल के रूप में धूम मचा दी। २००३ में बार्बी का मूल्य १.८७ अरब डॉलर आंका गया था। बार्बी के दम पर ही मैटल कंपनी फ़ॉरचून ५०० कंपनी बन गई । हैंडलर का नया काम यह था कि उन्होंने लड़कियों की खेलने वाली गुड़िया का हुलिया बदल दिया। उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि छोटी बच्चियाँ दरअसल छोटी लड़कियों की शक्ल वाली गुड़ियों से नहीं खेलना चाहतीं, वे तो बड़ी उम्र की गुड़ियों से खेलना चाहती हैं, जिन पर वे अपने प्रेम और रोमांस के सपनों को आरोपित कर सकें । हैंडलर ने पहली वयस्क युवती की गुड़िया बनाकर खिलौना उद्योग में क्रांति कर दी। रूथ हैंडलर की मृत्यु तो अप्रैल २००२ में हो गई, लेकिन बार्बी आज भी जिंदा है। ■

जीवनपथ वार्षिक सदस्यता शुल्क

* आप सिर्फ रू. २०१/- और २००१/- जीवन ज्योत कैन्सर रीलीफ एन्ड केअर ट्रस्ट में देकर बाहर गाँव से आनेवाले कैन्सर पीड़ित मरीज जो लम्बे समय से पीड़ित हैं उनकी देखभाल में आप भी भागीदार हो सकते हैं।

कबूल है

रबानी ने स्कूल से आकर अपनी मम्मी को बताया कि आज से हमें हर दिन स्कूल की ओर से समाचार पत्र पढ़ने को मिलेगा। साथ ही उसने खुश होते हुए अपने स्कूल बैग से समाचार पत्र की एक प्रति निकालकर मम्मी को दिखाई। समाचार पत्र पढ़ते हुए उसने अपनी मम्मी से पूछा कि संपादक महोदय ने अपने अखबार में ऐसा क्यों लिखा है कि "यदि आपको इस अखबार में कुछ गलतियां दिखाई दें तो चौंकिये मत, क्योंकि हम लोग हर किसी के लिये कुछ-न-कुछ जरूर छापते हैं। ऐसा करना हमारे लिये इसलिये भी जरूरी है, क्योंकि कुछ लोगों का काम ही गलतियां ढूंढना होता है।" रबानी ने कहा कि मैंने तो आज पहली बार देखा है कि कोई व्यक्ति अपनी गलती कबूल करने की इतनी हिम्मत रखता हो। स्कूल में हम से भी कई बार गलती हो जाती है, लेकिन हम तो सदा ही उसे छिपाने की कोशिश करते हैं। हम में से अधिकतर छात्र यह जानते हैं कि हमारे से गलती हुई है, लेकिन हम लोग फिर भी दुविधा में रहते हैं कि गलती कबूल करें या नहीं । क्योंकि हमें तो यही डर सताता रहता है कि अगर हमारा भेद खुल गया तो सभी लोग हमारा मज़ाक उड़ाने लगेंगे।

रबानी ने अपनी बात को और अच्छे ढंग से रखते हुए अपनी मम्मी से कहा कि सबसे बड़ी परेशानी तो उस समय होती है, जब हमारी टीचर हमें कोई काम किसी दल (टीम) के साथ मिलकर करने को कहती है और उस समय किसी एक छात्र से कोई गलती होने पर सारा काम खराब हो जाता है। ऐसे में सभी छात्र अपनी जान बचाने के लिये झट से सारा इल्जाम एक-दूसरे पर लगाने लगते हैं । रबानी की मम्मी ने उसके विचार सुनने के बाद उसे समझाते हुए कहा कि तुम बिलकुल ठीक कह रही हो। जिस तरह के माहौल की तुम बात कर रही हो, ऐसे में गलती कबूल करना सच में बड़ा ही मुश्किल

होता है, लेकिन बेटी एक बात सदा याद रखना कि गलतियां हमारे जीवन का हिस्सा हैं। गलतियां करने की कोई मनाही नहीं है, लेकिन हमें उन्हें स्वीकार करना भी आना चाहिए। जो लोग अपनी गलतियों को कबूल नहीं करते, वे कुछ भी नया सीखने और अपने जीवन को बेहतर बनाने के रास्ते खुद बंद कर देते हैं। इस चर्चा को सुनकर जौली अंकल की राय तो यही है कि यदि हम सभी तनावमुक्त होकर खुशी-खुशी जीवन गुज़ारना चाहते हैं, तो हमें अपनी हर गलती को कबूल करना भी सीखना होगा। ■

कर्करोग की भयानकता

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
☆ अशोक एस. दोशी	पेडररोड	११,०००/-
☆ रविन्द्र पोरे	भायखला	४,०००/-
☆ सुरेश छाबरिया	सांताक्रुझ	३,०००/-
☆ अनिल पांडुरंग भोईर	बांद्रा	२,०००/-
☆ संजीत जीतेन्द्र चवाण	दादर	१,०००/-
☆ सुनिता जीतेन्द्र थाले	वडाला	१,०००/-

जलाराम अन्नदानक्षेत्र

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
☆ सदाशिव वागले ह. महेश्वर वागले	विलेपार्ला	११,०००/-
☆ अशोक एस. दोशी	पेडररोड	७,०००/-
☆ अनिष गिरजाशंकर लखोटिया	वर्ली	५,००१/-
☆ सुजाता महाजन	गोरेगांव	५,०००/-
☆ सुंदर स्कंदन	शिवरी	४,०००/-

कहानी

पथ के दावेदार

(गतांक से आगे)

– शरतचंद्र

गाड़ी में स्थानाभाव के कारण दोनों एक-दूसरे से सटकर बैठे थे। एक घण्टे तक किराये की गाड़ी घरघराती हुई चलती ही रही, लेकिन दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। गाड़ी आकर अपूर्व के दरवाजे पर रुक गई। भारती भीतर से गाड़ी का द्वार खोलकर अपूर्व के साथ उतर पड़ी और गाड़ीवान से पूछा - ''कितना किराया हुआ?''

गाड़ीवान ने हंसकर कहा - ''नॉट ए पाई, गुडनाइट टू यू!'' यह कहकर वह गाड़ी हांकता हुआ चला गया।

भारती ने पूछा - ''तिवारी है?''

''है।''

ऊपर जाकर, दरवाजा खटखटाकर अपूर्व ने तिवारी को जगाया । किवाड़ खोलकर, प्रदीप के प्रकाश में तिवारी ने सबसे पहले भारती को देखा। कल अपूर्व वापस आया था, प्रायः भोर के समय आज लौटा है-रात समाप्त करके। साथ में भारती है। इसलिए तिवारी को समझने में कुछ शेष नहीं रहा। क्रोध से उसका सारा शरीर जलने लगा और बिना कुछ कहे ही वह तेजी से अपने बिस्तर पर जाकर, चादर ओढ़कर सो गया। इस लड़की को तिवारी प्यार करता था। एक दिन इसने उसे आसन्न मृत्यु के मुँह से बचाया था, इसलिए ईसाई होने पर भी वह इसे श्रद्धा की दृष्टि से देखता था, लेकिन इधर कुछ दिनों से जो परिस्थिति उपस्थित हुई थी, इससे तिवारी के मन में अपूर्व के सम्बन्ध में तरह-तरह की सम्भव असम्भव दुश्चिन्ताएं उठ रही थीं, यहां तक कि जाति नष्ट होने तक की! उस सर्वनाश की प्रत्यक्ष मूर्ति आज मानो तिवारी के मानसपट में एकदम ही मुद्रित हो गई।

उसे इस प्रकार सो जाते देखकर अपूर्व ने पूछा - ''किवाड़ बन्द नहीं किए तिवारी ?''

''मैं बन्द कर देती हूँ।'' भारती ने कहा ।

अपूर्व ने अपने सोने के कमरे में आकर देखा-बिछौना ज्यों-का-त्यों समेटा हुआ पड़ा है। भारती बोली - ''आप आरामकुर्सी पर बैठिए, मैं सब ठीक कर देती हूँ।''

अपूर्व ने फिर पुकारा - ''एक गिलास पानी ला दे तिवारी!''

पानी की सुराही और गिलास दिखाकर बिछौना बिछाती हुई भारती बोली - ''सोते हुए आदमी को क्यों जगाते हैं अपूर्व बाबू? आप ही ले लीजिए।''

एक ही सांस में पानी पीकर अपूर्व फिर बैठने जा रहा था, लेकिन भारती बोली- ''अब वहां नहीं बिछौने पर सो जाइए।''

अपूर्व शांत बालक की भांति लेट गया। भारती मसहरी डालकर उसे चारों ओर से दबा रही थी, हठात अपूर्व ने पूछा - ''तुम कहां सोओगी?''

''मैं?'' भारती ने आरामकुर्सी दिखाकर कहा- ''सवेरा होने में अब केवल एक घण्टे की देर है आप सो क्यों नहीं जाते?''

अपूर्व ने उसका हाथ पकड़कर कहा - ''वहां नहीं, तुम मेरे पास बैठो।''

''आपके पास?'' वास्तव में भारती के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । अपूर्व और चाहे जैसा भी हो, इन सब मामलों में वह कभी आत्म विस्मृत नहीं होता था। इस प्रकार कितने ही अवसरों में उन दोनों ने एक ही कमरे में रातें बिताई हैं, लेकिन मर्यादा हानि की एक भी बात या एक भी इशारा उसके आचरण से किसी दिन प्रकट नहीं हुआ।

अपूर्व ने कहा - ''यह देखो, इन लोगों ने मेरा हाथ तोड़ दिया। क्यों तुम मुझे इन लोगों के बीच खींच ले आई?'' उसकी बात का अन्तिम अंश अकस्मात रुलाई से रूंघ गया। भारती मसहरी को एक तरफ से उठाकर उसके पास बैठ

गई, जांच करके उसने देखा कि बहुत देर तक कड़े बन्धन में जकड़े रहने के कारण हाथों में स्थान-स्थान पर काली नसें उभरकर फूल उठी हैं। उसकी आँखों से आंसू गिर रहे थे भारती ने आंचल से उसे पोंछकर ढाढ़स बंधाकर कहा - ''कोई डर की बात नहीं है। मैं तौलिया भिगोकर लपेट देती हूँ। दो-एक दिन में ही सब ठीक हो जाएगा।'' यह कहकर वह उठकर गई और स्नानघर से एक अंगोछा भिगोकर ले आई और उससे हाथ बांधकर स्निग्ध कण्ठ से बोली - ''जरा सो जाने की कोशिश कीजिए, मैं आपके माथे पर हाथ फेर देती हूँ।'' यह कहकर वह धीरे-धीरे हाथ फेरने लगी।

अपूर्व बोला - ''कल जहाज मिलता तो कल ही चला जाता।''

भारती बोली - ''अच्छी बात है, परसों ही चलें जाइएगा।''

''गुरुजनों की बात न मानने का यही फल है। मां ने मुझे मना किया था।''

''मां शायद आपको नहीं आने देना चाहती थीं?''

''लेकिन मैंने नहीं सुना ! उसका फल यह हुआ। होनहार अवश्य होगा। दुर्गा-दुर्गा कहता हुआ परसों जहाज पर बैठ जाता तो काम बन जाता।'' यह कहकर उसने लम्बी सांस ली। लेकिन इसके साथ ही जो इसकी अपेक्षा भी सैकड़ों गुनी गहरी सांस, और एक व्यक्ति के हृदय की जड़ तक नि:शब्द तरंगित हो उठी-यह बात वह जान भी न सका।

अपूर्व बोला - ''इस मकान में पैर धरते ही तुम्हारे पिता से झगड़ा हुआ, अदालत में जुरमाना हुआ, इसी से मुझे चेत हो जाना चाहिए था।''

भारती चुप हो रही । अपूर्व फिर बोला - ''तिवारी ने मुझे बार-बार सावधान किया। नौकरी चली गई, पांच सौ रुपये महीने इस उम्र में कितने लोग पाते हैं। फिर यह हाथ मैं लोगों के सामने दिखाऊँगा कैसे?''

भारती ने धीरे-धीरे कहा - ''तब तक हाथ का दाग अच्छा हो जाएगा।'' इससे अधिक बात उसके मुँह से निकली ही नहीं । अपूर्व के सिर पर जो हाथ

फेर रही थी, वह हाथ अब चलना ही नहीं चाहता था । और इस अत्यन्त साधारण तुच्छ मनुष्य को वह मन ही मन प्यार करने लगी है इसका अनुभव करके वह अपने आप ही मानो लाज के मारे मर सी गई। यह बात उसके दल के बहुत लोग जान गए हैं। आज अपूर्व की जान बचाने जाकर वह उनके सामने अपराधिनी और सुमित्रा की दृष्टि में छोटी हो गई है, लेकिन इस अत्यन्त तुच्छ मनुष्य की हत्या करने की नीचता क्षुद्रता से वह उन लोगों की रक्षा कर सकी है इस बात को समझकर अब उसने गर्व का भी अनुभव किया।

अपूर्व बोला - ''दाग तो सहज में नहीं जाएगा। कोई पूछेगा तो क्या उत्तर दूँगा? इसी से तो लोग कहा करते हैं कि बंगालियों के लड़के बी. ए., एम.ए. पास तो कर लेते हैं, लेकिन बड़ी नौकरी संभाल नहीं सकते।''

''अच्छा, सो रहिए।'' यह कहकर भारती उठ खड़ी हुई।

''और जरा माथे पर हाथ फेर दो भारती!''

''नहीं, मैं बहुत थक गई हूँ।''

''तो रहने दो, रात भी अब शेष नहीं है।''

भारती पास की कोठरी में, डेक चेयर पर जाकर बैठ गई। अपूर्व के कमरे में अच्छी आरामकुर्सी थी, लेकिन उस तुच्छ आदमी को सामने रखकर एक ही कमरे में रात बिताने में आज उसे अत्यन्त लज्जा मालूम हुई। भारती को खयाल आया कि किस तरह और किसकी अपरिसीम करुणा से अपूर्व सुनिश्चित और आसन्न मृत्यु से रक्षा पा गया है, और अभी वह रात भी समाप्त नहीं हुई है, लेकिन इतनी बड़ी बात वह एकदम मानो भूल ही गया है। उसने अपने परम मित्र तलवलकर के प्रति, अपने दल के प्रति और विशेष रूप से इस डॉक्टर के प्रति कैसा असीम अपराध किया है यह बात तो उसे याद ही नहीं है। वहां तो बड़ी नौकरी और हाथ के दाग का ही ध्यान है! जब भारती को सामने की खुली खिड़की से प्रभात का प्रकाश दिखाई पड़ा, तब चुपचाप उसने द्वार खोला और तेज पैर बढ़ाकर सड़क पर जा पहुँची। *(क्रमशः)* ■

स्वाभिमान

आंबेर के राजा जयसिंह की छोटी रानी कोटा की राजकुमारी थी। उसकी यह विशेषता थी कि उसे सादगीपूर्ण रहन-सहन प्रिय था, जबकि जयसिंह उसे साज-सज्जा तथा आभूषणों से लदी देखना पसंद करता था।

एक दिन जयसिंह ने बातचीत के दौरान छोटी रानी से कहा, ''तुम्हारे वस्त्रों और आभूषणों से तो नगर की साधारण स्त्रियाँ भी अच्छे वस्त्रादि पहनती हैं। तुम तो उनसे भी हीन मालूम पड़ती हो।'' किन्तु रानी मौन ही रही। उसने उसे अनसुना कर दिया। इससे राजा को गुस्सा आ गया और उसने एक काँच का टुकड़ा उठाकर रानी के वस्त्र फाड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। यह देख रानी का स्वाभिमान जाग उठा। उसने फौरन राजा के म्यान की तलवार निकालकर आवेशपूर्ण शब्दों में कहा, ''स्वामी, मैंने जिस वंश में जन्म लिया है, वह इस प्रकार के उपहास को कदापि सहन नहीं कर सकता। यदि आपने पुनः कभी मेरा अपमान करने की चेष्टा की, तो उसका परिणाम अच्छा न होगा। आपको मालूम हो जायेगा कि आंबेर के राजकुमार काँच का टुकड़ा चलाने में उतने प्रवीण नहीं होते जितनी प्रवीण कोटा की राजकुमारियाँ तलवार चलाने में होती हैं।'' राजा जयसिंह की भयभीत मुद्रा देखकर वह आगे बोली, ''कोटावंश की किसी कन्या का भविष्य में कभी भी अपमान न हो इसीलिए मुझे ऐसा मजबूरन करना पड़ा है।''

जयसिंह भयभीत तो हो ही चुका था। उसने रानी से क्षमा माँगी और प्रतिज्ञा की कि वह भविष्य में उसका अपमान न करेगा और उसने इस वचन को भलीभाँति निभाया। ■

क्षमा ग्रहण कर बैर को बिसराएं

पौराणिक कथा के अनुसार त्रिजा त्रिशंकु ने यज्ञ किया। इसमें विश्वामित्र और वशिष्ठ के पुत्र शक्ति में किसी बात को लेकर संघर्ष हो गया और विश्वामित्र के श्राप से शक्ति और उसके सब भाइयों का राक्षसों ने आहार कर लिया।

यह सब महर्षि वशिष्ठ ने आँखों से देखा मगर वह तो क्षमा की साक्षात् मूर्ति थे। दूसरी ओर, उनके परिवार में कोहराम मच गया। उनकी पत्नी अरुंधती एवं शक्ति की पत्नी शोकसागर में डूब गई। वशिष्ठ ने यथावसर उन्हें धीरज बंधाया। पुत्र-वधू ने कहा- ''हमारा वंश नष्ट नहीं होगा। मेरे गर्भ में एक बालक है।''

पौत्र के पैदा होने पर वशिष्ठ ने उसका नाम पराशर रखा। बड़े होने पर उसने अपनी मां से पूछा - ''मां मेरे पिताजी कौन है?''

मां ने बेटे को सारा हाल सुनाया कि विश्वामित्र के श्राप से राक्षसों ने उसके पिता और पिता के भाइयों को नष्ट कर दिया। पराशर को भयंकर क्रोध आ गया। उन्होंने देवाधिदेव भगवान् शंकर की अर्चना की और अपने संकल्प को पूरा करने की शक्ति अर्जित कर ली। वह पूरे विश्व के संहार की योजना बनाने में जुट गए।

वशिष्ठ ने उनको समझाया- ''वत्स ! तुम्हारा क्रोध स्वाभाविक है किंतु विश्व के संहार की योजना उचित नहीं है।''

पराशर ने विश्व संहार की योजना को छोड़ राक्षस सत्र आरंभ किया। इस सत्र के फलस्वरूप राक्षस अग्नि में गिरकर भस्म होने लगे। मुनि वशिष्ठ ने यह देखा तो कहा- ''वत्स । इतना क्रोध मत करो। याद रखो, अपने किए के अनुसार सबका भला- बुरा होता है। सज्जनों का काम क्षमा करना होता है।''

पितामह का उपदेश सुनकर पराशर ने अपना सत्र समाप्त कर दिया। उसी समय दैत्यों के कुल पुरुष महर्षि पुलस्त्य ने प्रकट होकर कहा - ''पुत्र। क्षमा ग्रहण करके तुमने बैर को भुला दिया है। यह तुम्हारे कुल की मर्यादा के अनुरूप है। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम विभिन्न शास्त्रों के ज्ञाता बनोगे और विष्णुपुराण की रचना करोगे।''

महर्षि का आशीर्वाद फलीभूत हुआ और पराशर ने मैत्रेय को संबोधित करते हुए समस्त पाप विनाशक विष्णुपुराण की पंचलक्षणात्मक रचना की-

'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशमन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव भवतो गदितं मया ।
पुराणं वैष्णवं चैतत्सर्वकिल्बिष नाशनम् ।
विशिष्टं सर्वशास्त्रेभ्यः पुरुषार्थोपपादकम् ।।'

काव्य

मन मेरा मुर्दाघाट सा
भावनायें पता नहीं कहाँ गयीं,
या फिर चिर निद्रा में सो गयी।
खाली नहीं मन मेरा, है भरा भरा सा,
फिर चेहरे पर क्यों दिखती हीनता।
दुःखी मन मेरा हो गया है एकाकी,
भोग रहा मेरी कमजोरी की वेदना।
भावनाओं के विसर्जन के द्वार सा
मन क्यों है श्मशान सा ।
नाम ईश्वर का बीच बीच में गूँज रहा
'राम नाम सत्य है'
तो वो भी लगता भयावना उदास सा
और मन मेरा मुर्दाघाट सा ।

क्यों नहीं होता गुस्सा, पहले सा
गया कहाँ मेरा मान, अरमान
कहाँ सो गयी, मेरी इच्छा-अपेक्षा
मन होता जा रहा शान्त तालाब सा ।
ना ही अब जब कोई आन है,
ना ही किसी बात पर अपमान है
भूल गया हृदय की उमंगें,
वह ईर्ष्या, वह द्वेष
बात बात पर राग और क्लेश,
हाय, गयी कहाँ मेरी वेदना
लगता सब, काली रात अमावस सा,
करूँ क्या हो गया, खाली पंडाल सा
मन मेरा मुर्दाघाट सा ।

बिपीनभाई दाणी (हरसोल) एकता परिवार (I.G.) माटुंगा की प्रेरणा से

दाताओं के नाम	एरिया	योजना	रुपया
☛ भावेश महेन्द्र शाह (हरसोल) के जन्मदिन के अवसर पर	बोरीवली	जीवदया	५,०००/-
☛ स्व. वनलीलाबेन मधुसुदन शाह (ईन्द्रोडा) के आत्मश्रेयार्थे ह. मधुसुदन सोमचंद शाह परिवार	मुंबई	जीवदया	५,०००/-
☛ स्व. शारदाबेन और स्व. चिमनलाल साकळचंद शाह (उवारसद) के आत्मश्रेयार्थे ह. अमर भुपेन्द्र शाह	पूना	हल्दीदूध	२,५००/-
☛ स्व. अरविंदभाई वल्लभदास सोनेचा के आत्मश्रेयार्थे ह. हंसाबेन अरविंदभाई सोनेचा परिवार	कांदिवली	दवाइयाँ	२,०००/-
☛ ईन्द्रवदन एन. शाह की पुण्यतिथि के अवसर पर ह. मनोरमाबेन ईन्द्रवदन शाह	माटुंगा	जीवदया	२,०००/-
☛ स्व. महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) के आत्मश्रेयार्थे ह. अल्पाबेन अल्पेश गांधी	बोरीवली	दवाइयाँ	१,२००/-
☛ स्व. इन्दुमतीबेन महेन्द्रभाई गांधी (लिंबोद्रा) के आत्मश्रेयार्थे ह. बीना संजय गांधी	बोरीवली	जीवदया	१,२००/-
☛ स्व. नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे ह. मंजुलाबेन नटवरलाल शाह परिवार	कांदिवली	जीवदया	१,०००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. कांतिलाल नगीनदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे ह. कांतिलाल नगीनदास शाह परिवार	भायंदर	दवाईयाँ	१,०००/-
☛ स्व. सरस्वतीबेन रसीकलाल शाह (ऊनावा) के आत्मश्रेयार्थे ह. पल्लवी शिरीष शाह	सायन	जीवदया	५००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. बेचरदास दोशी के आत्मश्रेयार्थे ह. दिलीप बी. दोशी	मुलुंड	दवाइयाँ	५००/-
☛ स्व. शारदाबेन और स्व. चिमनलाल साकळचंद शाह (उवारसद) के आत्मश्रेयार्थे ह. हेमा प्रदीप शाह	पूना	जीवदया	५००/-

कहानी

मूरखराज

(गतांक से आगे)

ऐसा ही हुआ। बेचारे के लिए दूसरा कोई चारा ही नहीं था । इसलिए वह बारी-बारी एक-एक घर से रोटी पाकर पलने लगा।

होते-होते प्यारे के घर की भी बारी आ पहुँची शैतान घर के अन्दर खाना खाने के लिए पहुँचा तो रसोई में वह गूंगी बहन पीतम सारी तैयारी कर रही थी कि जल्दी से खाना बना ले।

गूंगी बहन पीतम बड़ी अनुभवी थी । जो लोग कामचोर होते और अपना काम निबटाने से पहले आकर खाने पर पहुँच जाते थे, उनको खूब पहचानती थी। उसकी आँखों को धोखा देना मुश्किल था।

असल में उसको हाथों की बड़ी पहचान थी, जिनकी हथेली खुरदरी और सख्त होती, उन्हें वह परोसकर देती थी । औरों को अलग और पीछे बैठाया जाता था।

वह बूढ़ा शैतान आकर रसोई में खाने के लिए बैठ गया, मगर गूंगी लड़की पकड़कर उसका हाथ देखने लगी। उसने देखा हथेलियां मुलायम और चिकनी थीं, नाखून भी घिसे हुए नहीं थे। हाथों में खुरदरापन बिल्कुल नहीं था। इस पर वह गूंगी बहन गुस्से में बड़बड़ाने लगी और खींचकर उसे पटड़े से अलग कर दिया।

इस पर प्यारे की पत्नी ने कहा - ''इस बात पर आप नाराज मत होना, मेरी ननद जी ऐसे आदमी को थाली पटड़े पर नहीं बैठाती जिसके हाथ काम से खुरदरे न हों । थोड़ा- सबर कीजिए लोग जब खा चुकेंगे, तो पीछे आपको मिलेगा इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं।''

बूढ़े शैतान को इस पर बड़ी झुंझलाहट हुई।

राजा के घर पर आकर उसका इस प्रकार अपमान किया गया, वह मूरखराज से बोला ''तुम्हारे राज्य में यह क्या बेवकूफी का कायदा है कि सबको हाथ से

काम करना पड़े। तुममें अक्ल नहीं है, तभी तो ऐसा कानून बनाया है । क्या लोग हाथ से ही काम करते हैं? अक्लमन्द लोग किससे काम करते हैं, कुछ जानते हो?''

प्यारे बोला - ''हम लोग मूरख हैं। वह सब हम कैसे जानेंगे? हम तो अपना ज्यादातर काम हाथ से और जिस्म से करते हैं।''

''तभी तो तुम मूरख हो, मैं बताऊँगा, कि दिमाग से काम कैसे किया जाता है, तब तुम्हें पता चलेगा कि हाथ से काम करने के बजाय सिर से काम करने से ज्यादा फायदा है।''

प्यारे आश्चर्यचकित रह गया।

कहने लगा - ''अगर ऐसी बात है, तब तो ठीक ही है कि हमको मूरख कहा जाता है।''

मगर बूढ़ा शैतान अपनी ही कहता रहा, बोला - ''लेकिन एक बात है, दिमाग का काम आसान नहीं होता। मेरे हाथों पर दाग नहीं है, सो तुम मुझे थाली पर नहीं बैठाते हो, लेकिन यह तुमको नहीं पता कि दिमाग का काम उससे सौ गुना कठिन होता है। कभी तो सिर उसमें फटने जैसा हो जाता है।

प्यारे सुनकर सोच में पड़ गया, बोला - ''तो बाबा, इतनी तकलीफ क्यों कोई अपने आपको दे? सिर फटने को होता है तो क्या यह कुछ अच्छा लगता है? इससे क्या बेहतर यह नहीं होगा कि हाथ और बदन के सहारे मोटा ही काम कर लिया जाए, जिससे सिर सही रहे?''

मगर शैतान बोला - ''यह सब हमें मूरख लोगों की खातिर करना पड़ता है। अगर अपने सिर पर हम जोर न दें तो तुम लोग हमेशा ही मूरख रह जाओ । सिर से काम लेने की वजह से अब मैं तुम्हें कुछ सिखा तो सकता हूँ।''

प्यारे आश्चर्य से बोला ''जरूर सिखाइए । जिससे कि हाथ दुःखने लगे तो जी बहलाव के लिए अपने सिर का भी कभी इस्तेमाल कर लिया करें।''

बूढ़े बाबा ने वचन दिया कि अच्छा सिखाऊँगा।

फिर प्यारे ने सारे राज्य में डौंडी पिटवा दी ''एक भले मानस आए हुए हैं। वह सिर से सबको काम करना सिखाएंगे कि किस प्रकार हाथ से ज्यादा सिर से काम कर सकते हैं। सभी लोग आएं और काम सीखें।''

प्यारे की राजधानी के नगर में ऊँची मीनार बनी थी । बहुत सारी सीढ़ियां चढ़कर उसकी चोटी पर पहुँचना पड़ता था। वहां एक लालटेन थी । प्यारे उन भलेमानस को वहीं चोटी पर ले गया कि सब लोग उनके दर्शन कर सकें। उसे अच्छी प्रकार देख सकें।

वह बाबा उस ऊँची चोटी पर जमकर बैठ गए और कहने लगे। लोग सुनने के लिए नीचे आए, उनका ख्याल था कि उपदेशक महोदय हाथों को बिना इस्तेमाल में लाए सचमुच सिर से काम करने का तरीका बताएंगे। मगर असल में जो उन्होंने बताया तो वह था कि बिना काम किए कैसे रहा जा सकता है। वह उन्हें उल्टी-सीधी बातें बताने लगा।

लोगों को उनका व्याख्यान कुछ ठीक नहीं लगा।

सभी लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, उनकी बातें लोगों की समझ में नहीं आ रही थीं। सभी लोग सोच-विचार में डूब गए थे। फिर वह अपने-अपने काम-धन्धों पर चल पड़े।

उपदेशक बाबा मीनार पर पूरे दो दिन जमे रहे। उनका व्याख्यान बराबर चलता रहता था, मगर इतनी देर वहां खड़े-खड़े उन्हें भूख लग आई थी। मूरख लोगों को मीनार पर जाकर उन्हें कुछ खाने के लिए देने की बात ही न सूझती थी । वह सोचते थे-अगर हाथ के बजाय यह महोदय सिर से और बढ़कर काम कर सकते हैं तो सिर के जोर से अपने लिए खाने का प्रबन्ध तो आसानी से कर ही सकते होंगे।

इस प्रकार तीसरा दिन हुआ।

बाबा अभी भी उसी जगह बिराजमान थे। वह बराबर अपना उपदेश दे रहे थे। लोग पास आते, थोड़ा-सा रुकते, सुनते थे। सुनने के बाद फिर वह अपनी-अपनी राह चले जाते थे।

प्यारे ने लोगों से पूछा- ''क्यों भाई, उन महाशय ने सिर से काम करना शुरू अभी किया है कि नहीं?''

लोग बोले- ''अभी तो कुछ नहीं बताया । अभी तक तो वह मुँह से ही बता रहे हैं ।''

इस प्रकार मीनार की चोटी पर खड़े हुए बोलते-बोलते उन्हें एक और दिन बीत गया । उनकी कमजोरी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी । इसलिए वह लड़खड़ाए और उनका सिर लालटेन के खम्भे में जाकर लगा, नीचे खड़े एक आदमी ने यह देखा तो दौड़ा गया और जाकर प्यारे की रानी को खबर दी।

रानी तेजी से दौड़ती हुई राजा के पास भागी। उस समय राजा काम कर रहा था। बोली- - ''अरे, चलो देखो तो । कहते हैं उन बाबा ने अब वहां सिर से काम करना शुरू कर दिया है।''

प्यारे को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। बोला - ''सचमुच ?''

उसके बाद वह जल्दी से हल-बैल छोड़कर मीनार के पास जा पहुँचा। इस समय तक वह बूढ़ा बाबा भूख से बेहाल हो चुका था और लड़खड़ाकर गिरा जा रहा था। बार-बार खम्भे से आकर सिर उसका टकराता था।

प्यारे का वहां पहुँचना था कि शैतान ढेर होकर ढह पड़ा और धम-धम जीने की सीढ़ियों पर से गिरता लुढकता आने लगा।

मूरख बोला - ''भाई इनका यह कहना सच था कि सिर के काम से कभी-कभी वह बिल्कुल फटने जैसा हो जाता है। छाला-गूमड़ी तो भला ऐसे में चीज़ क्या है । आश्चर्य नहीं, सिर के ऐसे सख्त काम के बाद मरहम-पट्टी की आवश्यकता पड़ सकती है।'' लुढ़कती पुढ़कती वह काया आई और नीचे की पैड़ी पर धरती

पर धड़ाम से उसका सिर लगा।

प्यारे उसके नजदीक पहुँचकर देखना ही चाहता था कि इन महोदय ने सिर से कितना कुछ कर्तब किया है, लेकिन उसी समय धरती फटी और उस काया का जीव वहीं जाने कहां पाताल में समा गया। बस एक वहां सूराख रह गया।

प्यारे आश्चर्य से यह सब देख रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा है?

यह देखकर फिर वह अपना सिर खुजाते हुए बोला, ''छिः यह तो वही नरक का गन्ध है। मुझे तो यह उसी योनि का कोई जीव मालूम पड़ता है। मगर राम-राम यह तो सबका बाप ही था।''

मूरखराज अपने राज्य में अब भी राज करता है, और बहुत लोग उसके राज्य में जाकर बसने पहुँचते हैं।

उसके दोनों भाई भी वहां बसने पहुँच गए। उसने उनका भी सम्मान किया जो भी परदेसी कोई पहुँचता था, सबको प्यारे राजा का कहना है - ''आओ भाई, सब आओ। आते रहो। हमारे यहां किसी को कोई कमी नहीं।''

केवल राज्य का एक नियम है, वह यह कि जिसके हाथ काम से खुरदरे होंगे, उसे तो मान की रोटी मिलेगी, बाकी को बचा खुचा ही मिल सकेगा।

■

अवयव दान, नेत्रदान और त्वचादान

जीवन के बाद भी एक सत्कार्य अर्थात नेत्रदान और अवयव दान । आज के वैज्ञानिक युग में मृत्यु के पश्चात शरीर के कुछ विभिन्न अंगों से यदि किसी अन्य व्यक्ति को जीवनदान देना संभव हो तो उसे जलाना, नष्ट नहीं करना चाहिए, उसे दान करना चाहिए। मृत्यु के बाद भी सत्कार्य संभव है। अतः जीवन पश्चात का अवयव दान एक उत्तम दान हो सकता है।

मिलना और बिछड़ना

विधाता ने मृत्यु से बचने का कोई उपाय ही नहीं बताया है, इसलिए जब आखिर एक दिन मरना ही है, तो ऐसे ढंग से मरो कि संसार में यश भी हो और परमात्मा की प्राप्ति भी हो।

जिस प्रकार बहती हुई नदी के बैग से बालू के कण एक दूसरे से मिलते और बिछड़ते हैं उसी प्रकार इस संसार रूपी नदी में समय के प्रवाह से प्राणियों का मिलना और बिछड़ना होता है।

संसार के जितने भी प्राणी वर्तमान में हमारे साथ हैं, वे सब जन्म के पहले हमारे साथ नहीं थे और मृत्यु के बाद भी साथ नहीं रहेंगे, जीवात्मा अपने कर्म के अनुसार कभी इस घर से उस घर में कभी इस योनि से उस योनि में घूमता रहता है । तो यह सारे रिश्ते शरीर तक ही सीमित हैं । जीवात्मा का इनका कोई संबंध नहीं है।

जैसे नदी में बहते हुए जिनके सदा एक साथ और एक स्थान पर नहीं रह सकते । वैसे ही सगे संबंधी और प्रेमी जन एक स्थान पर साथ साथ नहीं रह सकते । क्योंकि सबके प्रारब्ध कर्म अलग अलग होते हैं ।

इस संसार में कभी भी, कहीं भी, कोई भी, किसी के साथ हमेशा नहीं रह सकता । जितने भी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, उन्हें उनसे एक ना एक दिन अवश्य बिछड़ना पड़ेगा । चाहे स्त्री हो, चाहे पुत्र हो, चाहे धन हो, चाहे मकान हो, और चाहे अपना शरीर ही हो, इन सब को छोड़कर जाना ही पड़ेगा । अतः यह जीव अकेला ही पैदा होता है और अकेला ही मर कर जाता है। करनी धरनी, पाप पुण्य का फल भी अकेला ही भोक्ता है । इसलिए अधर्म की कमाई से कभी भी अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण नहीं करना चाहिये। नहीं तो पापों की गठरी अकेले ही सिर पर लादकर घोर नरको में गिरना पड़ेगा।

वास्तव में परमात्मा ही समस्त प्राणियों का भरण पोषण करते हैं । पर जीवात्मा संसार से अपना संबंध मान लेने के कारण सांसारिक व्यक्तियों को अपना मान लेता है और उस के भरण-पोषण का भार अपने ऊपर ले लेता है । जिससे वह व्यर्थ ही दुख भोगता है। ■

स्वयं को जाँचें

प्रस्तुति – दशरथ उपाडे (बाबु)

एक व्यक्ति के बारे में मशहूर हो गया कि उसका चेहरा बहुत मनहूस है। लोगों ने उसके मनहूस होने की शिकायत राजा से की। राजा ने लोगों की इस धारणा पर विश्वास नहीं किया, लेकिन इस बात की जाँच खुद करने का फैसला किया। राजा ने उस व्यक्ति को बुला कर अपने महल में रखा और एक सुबह स्वयं उसका मुख देखने पहुँचा।

संयोग से व्यस्तता के कारण उस दिन राजा भोजन नहीं कर सका। वह भी इस नतीजे पर पहुंचा कि उस व्यक्ति का चेहरा सचमुच मनहूस है। उसने जल्लाद को बुलाकर उस व्यक्ति को मृत्युदंड देने का हुक्म सुना दिया। जब मंत्री ने राजा का यह हुक्म सुना तो उसने पूछा, ''महाराज इस निर्दोष को मृत्युदंड क्यों दे रहे हैं ?''

राजा ने कहा, ''मंत्री जी! यह व्यक्ति वास्तव में मनहूस है। आज सर्वप्रथम मैंने इसका मुख देखा तो मुझे दिन भर भोजन भी नसीब नहीं हुआ।''

इस पर मंत्री ने कहा, ''महाराज क्षमा करें, प्रातः इस व्यक्ति ने भी सर्वप्रथम आपका ही मुख देखा था। आपको तो भोजन नहीं मिला, लेकिन आपके मुखदर्शन से इस बेचारे को तो मृत्युदंड मिल रहा है। अब आप स्वयं निर्णय करें कि कौन अधिक मनहूस है।''

राजा भौंचक्का रह गया। उसने इस दृष्टिकोण से तो सोचा ही नहीं था। राजा को किंकर्तव्य विमूढ़ देख कर मंत्री ने कहा, ''राजन्! किसी भी व्यक्ति का चेहरा मनहूस नहीं होता। वह तो भगवान की देन है।''

मनहूसियत हमारे देखने या सोचने के ढंग में होती है। आप कृपा कर इस व्यक्ति को मुक्त कर दें।

राजा ने उसे मुक्त कर दिया। ■

माँ–बाप का दिल

प्रस्तुति – चंद्रप्रभा पटेल *(मुलुंड)*

गार्डन में लैपटॉप लिए एक लड़के से बुजुर्ग दम्पति ने कहा- ''बेटा हमें फेसबुक का अकाउंट बना दो ।''

लड़के ने कहा- ''लाइये अभी बना देता हूँ, कहिये किस नाम से बनाऊँ?''

बुजुर्ग ने कहा- ''लड़की के नाम से कोई भी अच्छा सा नाम रख लो ।''

लड़के ने अचम्भे से पूछा- ''फेक अकाउंट क्यों ?''

बुजुर्ग ने कहा- ''बेटा, पहले बना तो दो फिर बताता हूँ क्यों ?'' बड़ो का मान करना उस लड़के ने सीखा था तो उसने अकाउंट बना ही दिया ।

अब उसने पूछा- ''अंकल जी, प्रोफाइल इमेज क्या रखूँ?'' तो बुजुर्ग ने कहा- ''कोई भी हीरोइन जो आजकल के बच्चों को अच्छी लगती हो ।'' उस लड़के ने गूगल से इमेज सर्च करके डाल दी, फेसबुक अकाउंट ओपन हो गया ।

फिर बुजुर्ग ने कहा- ''बेटा कुछ अच्छे लोगो को ऐड कर दो ।''

लड़के ने कुछ अच्छे लोगो को रिक्वेस्ट सेंड कर दी । फिर बुजुर्ग ने अपने बेटे का नाम सर्च करवा के रिक्वेस्ट सेंड करवा दी । लड़का जो वो कहते करता गया जब काम पूरा हो गया तो उसने कहा.... ''अंकल जी अब तो आप बता दीजिये आपने ये फेक अकाउंट क्यो बनवाया?''

बुजुर्ग की आँखे नम हो गयी, उनकी पत्नी की आँखों से तो आँसू बहने लगे। उन्होंने कहा- ''मेरा एक ही बेटा है और शादी के बाद वो हमसे अलग रहने लगा।

सालो बीत गए वो हमारे पास नहीं आता। शुरू शुरू में हम उसके पास जाते थे तो वो नाराज हो जाता था। कहता आपको मेरी पत्नी पसंद नहीं करती। आप अपने घर में रहिये, हमें चैन से यहाँ रहने दीजिये। कितना अपमान सहते इसलिए बेटे के यहाँ जाना छोड़ दिया। एक पोता है और एक प्यारी पोती है, बस उनको देखने का बड़ा मन करता है। किसी ने कहा कि फेसबुक में लोग अपने फैमिली की और फंक्शन की इमेज डालते है, तो सोचा फेसबुक में ही अपने बेटे से जुड़कर उसकी फैमिली के बारे में जान लेंगे और अपने पोता पोती को भी देख लेंगे, मन को शांति मिल जाएगी। अब अपने नाम से तो अकाउंट बना नहीं सकते। वो हमें ऐड करेगा नहीं, इसलिए हमने ये फेक अकाउंट बनवाया।''

बुजुर्ग दंपत्ति के नम आँखों को उनके पत्नी के बहते आँसुओं को देखकर उस लड़के का दिल भर आया और सोचने लगा कि माँ-बाप का दिल कितना बड़ा होता है ! जो औलाद के कृतघ्न होने के बाद भी उसे प्यार करते हैं और औलाद कितनी जल्दी माँ-बाप के प्यार और त्याग को भूल जाती है। ■

मानवता के साद को मिला हुआ प्रतिसाद

नाम	एरिया	रुपया
☆ शैलेष चवाण	थाणे	१०,०००/-
☆ श्री खंडेलवाल दिगंबर जैन समाज फाउन्डेशन	चर्चगेट	३,१००/-
☆ विनीत जैन	दादर	२,०२०/-
☆ शामसुंदर सीताराम नेवरेकर	वडाला	२,०००/-
☆ मानसी नायक	माहिम	२,०००/-
☆ सुधीर विष्णु परकाले	कालाचौकी	२,०००/-

आते-वस्त्र, जाते-गुण

प्रस्तुति - **दर्शना विचारे,** *थाणे*

राजा भोज ने एक बार अपनी सभा में विद्वानों को आमंत्रित किया । विभिन्न क्षेत्रों से विद्वान आए । उनकी वेशभूषा अलग-अलग थी ।

उनमें से एक विद्वान पर राजा की नजर पड़ी । वह सुरुचिपूर्ण वस्त्रों से सुसज्जित था । राजा उसके पहनावे से प्रभावित हुआ और उसे अपने समीप आसन पर बैठाया ।

विद्वानों के भाषण आरंभ हुए । एक-एक कर विद्वान भाषण देते और अपने आसन पर आकर बैठ जाते ।

अंत में एक ऐसा विद्वान मंच पर आया जो पुराने वस्त्र पहने हुए था । उसका भाषण सुनकर लोग मुग्ध हो गए । राजा भी उसकी विद्वता से बहुत प्रभावित हुआ।

राजा ने उसका बहुत सम्मान किया। यहां तक कि राजा उसे द्वार तक छोड़ने गया। राजा के सलाहकार ने पूछा, ''महाराज जिस विद्वान को अपने आसन के समीप बैठाया उसे आप छोड़ने द्वार तक नहीं गए लेकिन दूसरे को द्वार तक छोड़ने गए। इसका कोई कारण है क्या?''

राजा ने उत्तर दिया- ''विद्वान होना किसी के मस्तक पर नहीं लिखा होता है जिसे पढ़कर उसकी विद्वता की पहचान हो सके। मैंने उसके सुंदर पहनावे को देखकर उसका मान सम्मान किया। जब तक कोई व्यक्ति नहीं बोलता तब तक उसके वस्त्रों की चमक-दमक से उसके बड़ा होने का अनुमान लगाया जाता है । उस विद्वान का भाषण साधारण था । लेकिन जब साधारण दिखने वाले विद्वान ने बोलना शुरू किया तो मैं आश्चर्यचकित रह गया । उसकी भाषण

शैली गजब की थी । मैं उसके गुणों से बहुत अधिक प्रभावित हुआ । उस कारण से जाते समय उसे द्वार तक छोड़ने गया और उसका अभिनंदन किया। मैंने आते समय उस विद्वान का अभिनंदन किया जो अच्छे वस्त्रों में था और जाते समय उस विद्वान का अभिनंदन किया जो गुणों से परिपूर्ण था ।''

सभा में सभी व्यक्ति कहने लगे, ''आते वस्त्रों का और जाते गुणों का सम्मान होता है ।'' ■

आजमाकर देखिए

बच्चों के रोग

- छोटे बच्चों के रोगों में अत्यंत सौम्य एवं निर्दोष औषधि के रूप में तुलसी का उपयोग किया जा सकता है। इससे बच्चों का ज्वर, खाँसी, दूध का वमन कर देना, श्वास आदि अनेक प्रकार के रोगों में शीघ्र आराम होता है।
- शीत ऋतु में तुलसी के रस को थोड़ा गर्म कर के दें। जहाँ तुलसी के बीज का उपयोग होता है वहाँ बच्चों के लिए २ से ५ ग्राम की मात्रा पर्याप्त है। इसे दिन में तीन-चार बार दिया जा सकता है। निरोगी बच्चों को तुलसी का रस नियमित रूप से देने से बच्चे स्वस्थ रहते हैं।
- बच्चों के सर्दीवाले ज्वर में गर्म किया हुआ तुलसी का रस छाती और कपाल पर मलें, सुँधाएँ और एक छोटा चम्मच रस शहद में मिलाकर पिलाएँ।
- यदि बच्चों के मल या उल्टी में कृमि निकलते हों तो बायबिडंग के साथ तुलसी की पत्तियों को उबालकर पिलाएँ अथवा तुलसी का १० ग्राम रस, बायबिडंग, कांकच या हिमेज (हर्र) का चुटकीभर चूर्ण डालकर दिन में दो-तीन बार चटाएँ।
- बच्चों को सर्दी, खाँसी, कफ, उल्टी या दस्त की शिकायत होने पर तुलसी का रस पिलाने से लाभ होता है। ■

शेर बनना है या लोमड़ी।

प्रस्तुति – हिना कोठारी/बवेर, *कोच्ची*

एक बार एक किसान जंगल में लकड़ी बिनने गया तो उसने एक अद्भुत बात देखी।

एक लोमड़ी के दो पैर नहीं थे, फिर भी वह खुशी खुशी घसीट कर चल रही थी।

यह कैसे ज़िंदा रहती है जबकि किसी शिकार को भी नहीं पकड़ सकती, किसान ने सोचा। तभी उसने देखा कि एक शेर अपने दाँतो में एक शिकार दबाए उसी तरफ आ रहा है। सभी जानवर भागने लगे, वह किसान भी पेड़ पर चढ़ गया। उसने देखा कि शेर, उस लोमड़ी के पास आया। उसे खाने की जगह, प्यार से शिकार का थोड़ा हिस्सा डालकर चला गया।

दूसरे दिन भी उसने देखा कि शेर बड़े प्यार से लोमड़ी को खाना देकर चला गया। किसान ने इस अद्भुत लीला के लिये भगवान का मन में नमन किया। उसे अहसास हो गया कि भगवान जिसे पैदा करते हैं उसकी रोटी का भी इंतजाम कर देते हैं।

यह जानकर वह भी एक निर्जन स्थान चला गया और वहाँ पर चुपचाप बैठ कर भोजन का रास्ता देखता। कई दिन गुज़र गये, कोई नहीं आया। वह मरणासन्न होकर वापस लौटने लगा।

तभी उसे एक विद्वान महात्मा मिले। उन्होंने उसे भोजन पानी कराया, तो वह किसान उनके चरणों में गिरकर वह लोमड़ी की बात बताते हुए बोला- "महाराज,

जीवनपथ हिन्दी

₹ 10/-

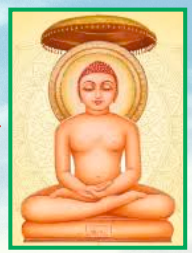

JEEVANPATH HINDI

Vol. No. 14, Issue No. 8 (₹ १०/- प्रचार के लिए) Mumbai, 15th March 2026
Website : www.jeevanjyot.in Total 36 Pages E-mail : jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

श्री जलाराम अन्नदान क्षेत्र... जय श्री जलाराम बापा' समाज के लोकहित की भावना में पूर्ण रूप से गैरव्यावसायिक मुखपत्र **जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट** की भेंट

तस्वीर बोल रही हैं मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा-खेतवाडी) प्रेरित जीवदया की

घायल कबूतर को इलाज के लिए जीवन ज्योत संस्था के जीवदया विंग में लाया गया ।

गरीब, निराधार कर्करोगग्रस्त मरीजों को अन्नक्षेत्र में, जीवदया में और टॉयबैंक में अनुदान देने वाले और इस अंक के सौजन्यदाता

साईशा-नाईशा मेघना निलय दाणी (हरसोल-माटुंगा) के जन्मदिन के अवसर पर

तस्वीर बोल रही हैं डायालिसिस सेन्टर की

जीवन ज्योत संस्था और मेवा संस्था द्वारा संचालित डायालिसिस सेन्टर में डायालिसिस करा रहे मरीज़ ।

तस्वीर बोल रही हैं अंगदान की

मस्तिष्क मृत शरीर से हृदय और अन्य अंगों को भुज अस्पताल से अहमदाबाद और अस्पताल से भुज हवाई अड्डे तक ग्रीन कोरीडोर बनाकर भेजे जाने के दौरान, अस्पताल के कर्मचारियों, परिवार के सदस्यों और पुलिस विभाग ने विशेष सलामी दी।
जीवन ज्योत संस्था और श्री लोक सेवा सार्वजनिक संस्था ने इस सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तस्वीर बोल रही हैं अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस उत्सव की

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कैंसर से पीड़ित महिलाओं को साड़ियां और बिस्कुट प्रदान कर रहे संस्था के संस्थापक और मैनेजिंग ट्रस्टी श्री हरखचंदभाई सावला (बाडावाला) और गवर्मेन्ट मेडिकल अधिकारी वैशाली जी वीर ।

तस्वीर बोल रही है फ्रुट वितरण की

सांगली में जीवन ज्योत संस्था अंतर्गत कैंसर अस्पताल में कैंसरग्रस्त मरीज़ों को फल दे रहे मीनाबेन मारु (हालापर) और अन्य साथी कार्यकर्ता ।

RNI. MAHHIN/2012/45662 Post Reg. MCE/141/2024-26.
Licence to Post Without Prepayment No. MR/TECH/WPP-208/EAST/2024-26.
Posted at Mumbai Patrika Channel Sorting Office, Mumbai- 400 001
Published and Posting on 15th of every month.

To,

तस्वीर बोल रही हैं संस्था के गौरव की

जीवन ज्योत संस्था के उत्कृष्ट कार्य की सराहना करके संस्था के संस्थापक और मैनेजिंग ट्रस्टी श्री हरखचंदभाई सावला (बाडावाला) का अभिवादन कर रहे गवर्मेन्ट मेडिकल अधिकारी श्रीमती वैशाली जी वीर ।

Printed, Published, Edited & Owned by - **Mr. H. K. Savla,** Published from **Jeevan Jyot Cancer Relief & Care Trust,** 3/9, Kondaji Chawl, Jerbai Wadia Road, Near Tata Hospital, Parel, Mumbai - 400 012. & Printed at **P. H. Printer,** 18-P, D. L. Jain Compound, Opp. Voltas Ltd., 64, Dr. B. A. Road, Chinchpokli (E), Mumbai 400 012 ***Editor*** : **H. K. Savla**